समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	7-1-26	2	1-5

The Tribune

Varsities mull roadmap for developed India

Two-day national conference at HAU to strengthen agricultural education & research concludes

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, JANUARY 6

The two-day conference organised by the Indian Agricultural Universities Association (IAUA) at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) concluded here today. Vice-Chancellors from agricultural, horticulture, animal husbandry and fisheries universities across the country participated in the conference.

Addressing the gathering, the IAUA president and Vice-Chancellor of GB Pant University of Agriculture and Technology, Pantnagar, Dr Manmohan Singh, said it is a platform to give new direction to agricultural education, research and innovation in the country, ultimately strengthening farmers, students and the national economy. He said there are 74 agricultural universities in the country, which are playing a key role in developing latest technologies and improved varieties in agriculture, enhancing horticultural production, and evolving advanced practices in animal husbandry and fisheries.

Vice-Chancellors and officials of universities engage in discussions during a conference. TRIBUNE PHOTO

Dr Singh said making agriculture profitable, increasing production, ensuring nutritional security and promoting innovations have now become major responsibilities of agricultural universities. He added that the primary objective of IAUA is to share the excellent work being done by different universities and to ensure solutions to challenges by establishing coordination with the government, so that universities can perform their roles more effectively.

HAU Vice-Chancellor Prof BR Kamboj said discussions were held during the conference on the roadmap for the role of agricultural universities in making India a developed nation by 2047. He said the conference acts as a bridge for sharing latest technologies and finding solutions to agricultural challenges. He called upon universities to cooperate with each other through memoranda of understanding in the field of research, which would yield better outcomes. Prof Kamboj said the recommendations of the conference would prove to be a milestone in advancing agricultural education, research and extension.

Indian Council of Agricultural Research Additional Director General Dr Ajit Singh Yadav said that under the National Education Policy 2020, agricultural universities can include certain important topics in undergraduate and postgraduate courses as per their requirements, enabling students to gain knowledge to address local agricultural problems. He said agricultural universities can work together with ICAR to resolve their issues effectively.

Former IAUA president Dr Parvinder Kaushal, Secretary Dr Dinesh Kumar and other office-bearers also participated in the conference. Vice-Chancellors from various universities, the Registrar of HAU, Deans of different colleges, Directors, officers and scientists were present on the occasion.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	7-1-26	2	3-8

दैनिक भास्कर

भास्कर एक्सक्लूसिव हिसार में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन के 49वें सम्मेलन में कुलपतियों ने दिए सुझाव

स्मार्ट खेती-2047: एआई बताएगा खेत में कितना पानी और खाद देना है; ड्रोन टेक्नोलॉजी और रोबोटिक्स मशीनें किसानों का खर्च कम करेंगी

यशपाल सिंह | हिसार

किसानों की आमदनी दोगुनी करनी है तो कृषि क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस व मैकेनाइजेशन को बढ़ावा देना होगा। खेत में कितनी खाद-पानी की जरूरत है यह एआई सेंसर्ड बेस्ड मशीनें बताएंगी। खेती के खर्च को कम करने में एआई, ड्रोन टेक्नोलॉजी व रोबोटिक्स मशीनें काम करेंगी। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन आईएयूए द्वारा आयोजित 49वें कुलपति दो दिवसीय सम्मेलन के विकसित भारत 2047 में कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान विषय पर सेशन में यह बात उभरकर सामने आई। सम्मेलन में 50 कृषि विवि के कुलपति व वैज्ञानिकों ने भाग लिया। सम्मेलन की रिपोर्ट भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान आईसीएआर, नई दिल्ली को भेजी जाएंगी। अभी देशभर में 74 मिलियन टन खाद्यान्न की कटाई के बाद भंडारण, ट्रांसपोर्टेशन के कारण 27 प्रतिशत तक खाद्यान्न जिसमें अन्न, फल, सब्जियां नष्ट हो जाती हैं।

ये सिफारिशें आईसीएआर को भेजी जाएंगी

- भारत के पास विश्व की सबसे बड़ी राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान व शिक्षा प्रणालियों एनएआरईएस में से एक है। उसने कृषि विश्वविद्यालयों के लिए ज्ञान केंद्रों से नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र में विकसित होने की आवश्यकता पर जोर दिया।
- एनईपी 2020 के अनुरूप रखते हुए लचीली, बहुविषयक, अनुसंधान-उन्मुख और समावेशी कृषि शिक्षा, प्रौद्योगिकी-संचालित अनुसंधान, सतत निवेश और किसान-केंद्रित, बाजार से जुड़ी और डिजिटल रूप से सक्षम विस्तार प्रणाली विकसित हो।
- पारंपरिक ज्ञान, संस्थागत विज्ञान और आधुनिक नवाचार के बीच निरंतरता पर जोर दिया और अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए किस्मों और नस्लों के लिए रॉयल्टी तंत्र की मांग की गई।
- पशुधन की उत्पादकता और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में प्रजनन जैव प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी भूमिका और जीनोम एडिटिंग टूल्स की क्षमता पर जोर देना होगा।
- उत्पादन लागत को कम करने और उत्पादकता बढ़ाने के लिए छोटे किसानों के लिए कृषि में मशीनीकरण को बढ़ावा।

भास्कर एक्सपर्ट जलवायु के अनुरूप वैरायटी तैयार करने पर जोर

प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, हकृवि, हिसार

किसान पैकेजिंग, ब्रांडिंग व मार्केटिंग को बढ़ावा दें

किसानों को आमदनी डबल करनी है तो पैकेजिंग, ब्रांडिंग व मार्केटिंग पर ध्यान देना होगा। नए स्टार्टअप और इनोवेसन को भी बढ़ावा देना होगा। जलवायु के अनुरूप ही वैरायटी तैयार करनी होंगी। सम्मेलन में तीन तकनीकी सेशन में विभिन्न विषयों पर चर्चाएं हुई, जिनका पॉलिसी पेपर तैयार कर आईसीएआर को भेजा जाएगा।

डॉ. इद्रमणी मिश्रा, कुलपति वीआरएन कृषि विवि परबणी, महाराष्ट्र

महाराष्ट्र में सिंचाई के लिए त्रिशूल तकनीक का प्रयोग

महाराष्ट्र के एरिया में सिंचाई जल की कमी है, वहां सिंचाई के लिए त्रिशुल टेक्नोलॉजी विकसित की है। वहां खेतों में लोग तालाब बनाकर पानी एकत्रित कर स्प्रिंकलर और ड्रिप इरीगेशन का इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके लिए सोलर एवं माइक्रो पंपों का भी इस्तेमाल किया जा रहा है।

डॉ. मनमोहन, कुलपति जीबीपीयूएटी पंतनगर एवं अध्यक्ष, आईएयूए

स्मार्ट खेती करना समय की मांग, तकनीक का प्रयोग करें

किसानों को स्मार्ट एग्रीकल्चर करने की जरूरत होगी। भारत में खाद्यात्र उत्पादन का 27% तक ही प्रोसेसिंग और वेल्यू एड हो पाता है। जबकि यूएसए व यूरोप के विकसित देशों में यह 90% तक है। इसलिए खेती तभी लाभकारी होगी जब तकनीकों और एआई का इस्तेमाल करते हुए इनके प्रोडेक्टस तैयार किए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	7-1-26	2	3-7

सम्मेलन • हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आईएयूए के 49वें कृषि विवि कुलपति के सम्मेलन का समापन

ऐसे सम्मेलनों से देश में कृषि शिक्षा, अनुसंधान व नवाचार को मिलेगी नई दिशा : डॉ. मनमोहन सिंह

भास्कर न्यूज़ | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन आईएयूए द्वारा आयोजित किए गए दो दिवसीय सम्मेलन का समापन हो गया।

सम्मेलन में देश के कृषि, बागवानी, पशुपालन तथा मत्स्य पालन विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भाग लिया। आईएयूए के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने बताया कुलपतियों का सम्मेलन केवल एक औपचारिक बैठक नहीं, बल्कि देश में कृषि शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को नई दिशा देने वाला मंच है। जो अंततः किसानों, विद्यार्थियों और देश की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाता है। देश में 74 कृषि विश्वविद्यालय हैं जोकि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक एवं उन्नत किस्म विकसित करने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं।

सम्मेलन में उपस्थित कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति।

सम्मेलन का उद्देश्य कृषि शिक्षा को समयानुकूल, रोजगार परक व तकनीक आधारित बनाना : प्रो. बीआर काम्बोज

हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि देश को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका के रोडमैप पर सम्मेलन में चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि नवीनतम तकनीकों को एक दूसरे से सांझा करने एवं कृषि संबंधी चुनौतियों का समाधान निकालने में यह सम्मेलन एक सेतु का कार्य करता है।

कार्यक्रम में आईसीएआर के एडीजी डॉ. अजीत सिंह यादव ने बताया कि नई शिक्षा नीति-2020 के तहत कृषि विश्वविद्यालय स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में अपनी आवश्यकता के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण टॉपिक शामिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय आईसीएआर के साथ मिलकर अपनी समस्याओं का निदान कर सकते हैं।

सम्मेलन में आईएयूए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. परविन्दर कौशल एवं सचिव डॉ. दिनेश कुमार सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी भाग लिया।

हकृवि में कुलपति सम्मेलन के तकनीकी सत्रों में हुआ कृषि, शिक्षा, शोध एवं नवाचार पर मंथन

प्रथम सत्र के चेयरमैन वीसीएसजी उत्तराखंड बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. परविन्दर कौशल, दूसरे सत्र के चेयरमैन उड़ीसा कृषि विवि के कुलपति प्रो. पर्वत कुमार राउल तथा तीसरे सत्र के चेयरमैन इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन आईएयूए के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह रहे।

प्रथम सत्र में डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला के कुलपति डॉ. शरद रामराव गडाख ने किसानों की आय दोगुनी करने का मॉडल प्रस्तुत किया। वसंतराव नाइक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ, परभणी के कुलपति प्रो. इन्द्रमणि ने 'एक लचीले कल के लिए जलवायु-स्मार्ट खेती' पर अपने विचार रखे। सत्र में उत्पादन लागत को कम करने और उत्पादकता बढ़ाने के लिए छोटे किसानों के लिए खेत पर मशीनीकरण बढ़ाना, कृषि के मशीनीकरण में एक प्रभावी उपकरण के रूप में गांव स्तर पर कस्टम हायरिंग सेंटर स्थापित करना, ग्रामीण युवाओं और एग्रीकल्चर ग्रेजुएट्स को एग्री-एंटरप्रेन्योर के तौर पर खेती की ओर आकर्षित करना जैसे बिंदुओं को अपनाने पर विशेष जोर दिया गया।

दूसरे सत्र में हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार को मजबूत करने पर अपने विचार रखे। जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने वर्ष 2047 के लिए पशुओं में जीनोम एडिटिंग और क्लोनिंग टेक्नोलॉजी भविष्य की डेयरी मांग को पूरा करने में गेम चेंजर साबित होगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	7-1-26	4	1-6

कृषि में पैदावार तकनीक बढ़ाने और लागत खर्च घटाने पर काम करने के लिए देशभर के कुलपति एकमत

मशीनीकरण से मजबूती, नवाचार से समृद्ध होगी राह

माई सिटी रिपोर्टर

एचएयू में कुलपति सम्मेलन में मंथन करते विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं अन्य। स्रोत : संस्थान

हिसार। कुलपतियों के 49वें सम्मेलन में 'विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका' पर गहरी चर्चा हुई। सम्मेलन में कृषि क्षेत्र में मशीनीकरण से मजबूती, तकनीकी नवाचारों को बढ़ावा देने और लागत खर्च घटाने के लिए देश भर के कुलपतियों ने एकमत होकर कदम उठाने की सहमति जताई। सभी कुलपतियों ने यह निर्णय लिया कि एक संस्थान में हो रहे शोध कार्य को दूसरे संस्थानों के साथ साझा किया जाएगा। इससे कृषि की राह समृद्ध होगी।

प्रथम सत्र में डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ अकोला के कुलपति डॉ. शरद रामराव गडाख ने किसानों की आय दोगुनी करने के लिए एक मॉडल प्रस्तुत किया। वसंतराव नाइक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ परभणी के कुलपति प्रो. इंद्र मणि ने ''''लचीले भविष्य के लिए जलवायु-स्मार्ट खेती'''' पर अपने विचार रखे। उन्होंने छोटे किसानों के लिए खेतों में मशीनीकरण बढ़ाने और उत्पादन लागत को कम करने के उपायों पर बल दिया। समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस/डिजिटल प्लेटफॉर्म के इस्तेमाल से खेती को कम से कम इंसानी दखल के साथ सपोर्ट करने के उपायों पर चर्चा की गई। साथ ही, फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने और प्रोसेसिंग अनुपात बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। असम कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बिद्युत चंदन डेका ने इस सत्र में अपने विचार रखे।

दूसरे सत्र में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज ने कहा कि खाद्य सुरक्षा, किसानों की समृद्धि और सतत विकास के लिए अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार को मजबूत करना जरूरी है। उन्होंने नई शिक्षा नीति-2020 को लचीली, बहु-विषयक और अनुसंधान-उन्मुख बताया, जो कृषि शिक्षा को अधिक किसान-केंद्रित, बाजार-लिंकड और डिजिटल रूप से सक्षम बनाएगी।

तीसरे सत्र में सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाने पर विस्तृत चर्चा की गई। एनडीआरआई करनाल के निदेशक और कुलपति डॉ. धीर सिंह ने पोषण सुरक्षा के बढ़ते महत्व पर जोर दिया। सम्मेलन में आईएयूए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. परविंदर कौशल, सचिव डॉ. दिनेश कुमार आदि मौजूद रहे।

एचएयू के कुलपति प्रो. कांबोज ने कहा कि सम्मेलन में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका के रोडमैप पर विचार किया गया, जो देश को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में मदद करेगा। सभी विश्वविद्यालय एक-दूसरे के साथ एमओयू के माध्यम से शोध कार्य में सहयोग करें, ताकि बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकें। सम्मेलन की सिफारिशें कृषि शिक्षा, शोध और विस्तार को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण साबित होंगी।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के एडीजी डॉ. अजीत सिंह यादव ने बताया कि नई शिक्षा नीति-2020 के तहत कृषि विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रमों में कुछ महत्वपूर्ण टॉपिक जोड़ सकते हैं, जो विद्यार्थियों को स्थानीय कृषि समस्याओं का समाधान करने में मदद करेंगे। विश्वविद्यालय भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के साथ मिलकर इन समस्याओं का निदान कर सकते हैं।

एक मंच पर लाना ही उद्देश्य

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष और जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को नई दिशा देने वाला एक महत्वपूर्ण मंच है। देश में 74 कृषि विश्वविद्यालय हैं, जो कृषि को लाभकारी बनाने, उत्पादन बढ़ाने और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहे हैं। आईएयूए का उद्देश्य विश्वविद्यालयों के उत्कृष्ट कार्यों को साझा करना, समस्याओं का हल निकालने के लिए सरकार के साथ तालमेल स्थापित करना है।

अग्रोहा शक्तिपीठ का किया भ्रमण

अग्रोहा। एचएयू में आयोजित कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के सम्मेलन के दूसरे दिन मंगलवार को देशभर से आए कुलपतियों के प्रतिनिधिमंडल ने ऐतिहासिक अग्रोहा शक्तिपीठ एवं अग्र विभूति स्मारक का भ्रमण किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल शरण गर्ग ने अतिथियों का स्वागत कर स्मारक परिसर का अवलोकन कराया। विपिन गोयल छानीवाला ने बताया कि कुलपतियों ने स्मारक में संचालित सामाजिक, शैक्षणिक व सेवा कार्यों की सराहना करते हुए इसे भारतीय संस्कृति का जीवंत केंद्र बताया। संवाद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	7-1-26	12	3-6

हकृवि में कुलपतियों के दो दिवसीय 49वें सम्मेलन का समापन

आईएयूए का उद्देश्य विवि के उत्कृष्ट कार्यों को सांझा करना : डॉ. मनमोहन सिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶|हिसार

आईएयूए के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा है कि कुलपतियों का सम्मेलन केवल एक औपचारिक बैठक नहीं, बल्कि देश में कृषि शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को नई दिशा देने वाला मंच है। जो अंततः किसानों, विद्यार्थियों और देश की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाता है।

उन्होंने कहा कि देश में 74 कृषि विश्वविद्यालय हैं जो कि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक एवं उन्नत किस्म विकसित करने, बागवानी की पैदावार बढ़ाने, पशुपालन एवं मत्स्य पालन संबंधी उन्नत पद्यतियां विकसित करने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। डॉ. मनमोहन सिंह मंगलवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यायल में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) की ओर से आयोजित किए गए दो दिवसीय सम्मेलन के समापन अवसर पर संबोधन दे रहे थे।

हिसार। सम्मेलन में मंथन करते विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं अन्य।

सम्मेलन में देश के कृषि, बागवानी, पशुपालन तथा मत्स्य पालन विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि कृषि को लाभकारी बनाने, उत्पादन बढ़ाने, पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तथा नवाचारों को बढ़ावा देना भी इन विश्वविद्यालयों की अहम जिम्मेवारी बन चुका है। उन्होंने बताया कि आईएयूए का मुख्य उद्देश्य अलग-अलग विश्वविद्यालयों द्वारा किए उत्कृष्ट कार्यों को सांझा करना, कार्यों में आ रही चुनौतियों का हल निकालने के लिए सरकार के साथ तालमेल स्थापित करके समाधान सुनिश्चित करना है ताकि विश्वविद्यालय और अधिक बेहतर ढंग से अपना कार्य कर सकें।

कृषि शिक्षा पर चर्चा

हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि देश को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका के रोडमैप पर सम्मेलन में चर्चा की गई। उन्होंने आईएयूए का धन्यवाद करते हुए कहा कि नवीनतम तकनीकों को एक दूसरे से सांझा करने एवं कृषि संबंधी चुनौतियों का समाधान निकालने में यह सम्मेलन एक सेतु का कार्य करता है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी विश्वविद्यालय आपस में एमओयू के माध्यम से शोध के क्षेत्र में एक दूसरे का सहयोग करें तो इसके और बेहतर परिणाम होंगे। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य कृषि शिक्षा को समयानुकूल, रोजगारपरक और तकनीक आधारित बनाना है। सम्मेलन में कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के एडीजी डॉ. अजीत सिंह यादव, आईएयूए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. परविंदर कौशल एवं सचिव डॉ. दिनेश कुमार सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर सम्मेलन में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी तथा वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	7-1-26	5	6-8

आईएयूए का उद्देश्य विश्वविद्यालयों के उत्कृष्ट कार्यों को साझा करना व चुनौतियों का हल निकालना : डॉ. मनमोहन सिंह

सम्मेलन में मंथन करते विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति व अन्य।

हकृवि में कुलपतियों का 49वां सम्मेलन सम्पन्न

हिसार, 6 जनवरी (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) द्वारा आयोजित किए गए दो दिवसीय सम्मेलन का समापन हुआ। सम्मेलन में देश के कृषि, बागवानी, पशुपालन तथा मत्स्य पालन विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भाग लिया। आईएयूए के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि कुलपतियों का सम्मेलन केवल एक औपचारिक बैठक नहीं, बल्कि देश में कृषि शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को नई दिशा देने वाला मंच है। जो अंतत: किसानों, विद्यार्थियों और देश की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाता है। उन्होंने कहा कि देश में 74 कृषि विश्वविद्यालय हैं जोकि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक एवं उन्नत किस्म विकसित करने, बागवानी की पैदावार बढ़ाने, पशुपालन एवं मत्स्य पालन संबंधी उन्नत पद्यतियां विकसित करने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं।

हकृवि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका के रोडमैप पर सम्मेलन में चर्चा की गई। उन्होंने आईएयूए का धन्यवाद करते हुए कहा कि नवीनतम तकनीकों को एक दूसरे से सांझा करने एवं कृषि संबंधी चुनौतियों का समाधान निकालने में यह सम्मेलन एक सेतु का कार्य करता है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी विश्वविद्यालय आपस में एमओयू के माध्यम से शोध के क्षेत्र में एक दूसरे का सहयोग करें तो इसके और बेहतर परिणाम होंगे। इस सम्मेलन की सिफारिशें कृषि शिक्षा, शोध एवं विस्तार को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होंगी। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य कृषि शिक्षा को समयानुकूल, रोजगारपरक और तकनीक आधारित बनाना है। कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी डॉ. अजीत सिंह यादव ने बताया कि नई शिक्षा नीति-2020 के तहत कृषि विश्वविद्यालय स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में अपनी आवश्यकता के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण टॉपिक शामिल कर सकते हैं। सम्मेलन में आईएयूए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. परविन्दर कौशल एवं सचिव डॉ. दिनेश कुमार सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर सम्मेलन में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी तथा वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	7-1-26	5	1-3

हकृवि में कुलपति सम्मेलन के तकनीकी सत्रों में हुआ कृषि शिक्षा, शोध व नवाचार पर मंथन

सम्मेलन में तकनीकी सत्र के दौरान मंथन करते विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति व अन्य।

हिसार, 6 जनवरी (विरेन्द्र वर्मा): कुलपतियों के 49वें सम्मेलन में तीन तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में खेत से भविष्य तक- कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, दूसरे सत्र में विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा तीसरे सत्र में सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर विभिन्न कुलपतियों ने अपने विचार रखे। प्रथम सत्र के चेयरमैन वीसीएसजी उत्तराखंड बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. परविन्दर कौशल, दूसरे सत्र के चेयरमैन उड़ीसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पर्वत कुमार राउल तथा तीसरे सत्र के चेयरमैन इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह रहे। प्रथम सत्र में डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला के कुलपति डॉ. शरद रामराव गडाख ने किसानों की आय दोगुनी करने का मॉडल प्रस्तुत किया। वसंतराव नाइक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ, परभणी के कुलपति प्रो. इन्द्र मणि ने 'एक लचीले कल के लिए जलवायु-स्मार्ट खेती' पर अपने विचार रखे। सत्र में उत्पादन लागत को कम करने और उत्पादकता बढ़ाने के लिए छोटे किसानों के लिए खेत पर मशीनीकरण बढ़ाना, कृषि के मशीनीकरण में एक प्रभावी उपकरण के रूप में गांव स्तर पर कस्टम हायरिंग सेंटर स्थापित करना, ग्रामीण युवाओं और एग्रीकल्चर ग्रेजुएट्स को एग्री-एंटरप्रेन्योर के तौर पर खेती की ओर आकर्षित करना, प्रति यूनिट एरिया में सस्टेनेबिलिटी और प्रॉफिटेबिलिटी बढ़ाने के लिए दोहराए जा सकने वाले समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल का विकास, कम से कम इंसानी दखल के साथ खेती को सपोर्ट करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस/डिजिटल प्लेटफॉर्म, फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करना और प्रोसेसिंग का अनुपात बढ़ाने जैस बिंदुओं को अपनाने पर विशेष जोर दिया गया। अ जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने वर्ष 2047 के लिए पशुओं में जीनोम एडिटिंग और क्लोनिंग विषय पर अपने विचार रखते हुए बताया कि ये टेक्नोलॉजी भविष्य की डेयरी मांग को पूरा करने में गेम चेंजर साबित होगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	7-1-26	8	6-8

हकृवि में कुलपतियों के 49वें सम्मेलन में कृषि शिक्षा, शोध व नवाचार पर व्यापक मंथन

हिसार, 6 जनवरी (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के तत्वावधान में आयोजित कुलपतियों के 49वें सम्मेलन में कृषि शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार और सतत विकास को लेकर गहन विचार-विमर्श हुआ। दो दिवसीय सम्मेलन में देशभर के कृषि, बागवानी, पशुपालन और मत्स्य पालन विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भाग लिया।

सम्मेलन के दौरान तीन तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। पहले सत्र में 'खेत से भविष्य तक: कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण', दूसरे में 'विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका' और तीसरे सत्र में 'सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु' विषय पर चर्चा हुई। प्रथम सत्र की अध्यक्षता उत्तराखंड बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. परविन्दर कौशल, दूसरे सत्र की उड़ीसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पर्वत कुमार राउल तथा तीसरे सत्र की आईएयूए अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने की।

हिसार में सम्मेलन में तकनीकी सत्र के दौरान मंथन करते विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं अन्य।-हप्र

प्रथम सत्र में डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला के कुलपति डॉ. शरद रामराव गडाख ने किसानों की आय दोगुनी करने का मॉडल प्रस्तुत किया। वसंतराव नाइक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ के कुलपति प्रो. इन्द्र मणि ने जलवायु-स्मार्ट खेती पर प्रकाश डाला। सत्र में छोटे किसानों के लिए मशीनीकरण, कस्टम हायरिंग सेंटर, एग्री-एंटरप्रेन्योरशिप, एकीकृत कृषि प्रणाली, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल प्लेटफॉर्म और पोस्ट-हार्वेस्ट लॉस कम करने जैसे बिंदुओं पर जोर दिया गया।

दूसरे सत्र में हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि खाद्य सुरक्षा, किसान समृद्धि और सतत विकास के लिए कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार को मजबूत करना राष्ट्रीय आवश्यकता है। पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने पशुओं में जीनोम एडिटिंग और क्लोनिंग को भविष्य की डेयरी जरूरतों के लिए अहम बताया, जबकि एनडीआरआई करनाल के निदेशक डॉ. धीर सिंह ने पोषण सुरक्षा पर बल दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	7-1-26	4	1-4

कुलपतियों का सम्मेलनः तकनीकी सत्रों में हुआ कृषि शिक्षा, शोध एवं नवाचार पर मंथन, किसानों की आय दोगुनी करने का मॉडल प्रस्तुत किया

आई.ए.यू.ए.का उद्देश्य विश्वविद्यालयों के उत्कृष्ट कार्यों को सांझा करना एवं चुनौतियों का हल निकालनाः डॉ मनमोहन सिंह

सम्मेलन में मंथन करते विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं अन्य।

हकृवि में कुलपतियों के 49 वें सम्मेलन का हुआ समापन

हिसार, 6 जनवरी (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आई.ए.यू.ए.) द्वारा आयोजित किए गए दो दिवसीय सम्मेलन का समापन हुआ। सम्मेलन में देश के कृषि, बागवानी, पशुपालन तथा मत्स्य पालन विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भाग लिया। इस दौरान तकनीकी सत्रों में कृषि शिक्षा, शोध एवं नवाचार पर मंथन हुआ। साथ ही किसानों की आय दोगुनी करने का मॉडल प्रस्तुत किया गया। इसके अलावा सम्मेलन में कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाने को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।

आई.ए.यू.ए. के अध्यक्ष एवं जी.बी.पी.यू.ए.टी. पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि कुलपतियों का सम्मेलन केवल एक औपचारिक बैठक नहीं, बल्कि देश में कृषि शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को नई दिशा देने वाला मंच है। जो अंततः किसानों, विद्यार्थियों और देश की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाता है। उन्होंने कहा कि देश में 74 कृषि विश्वविद्यालय हैं जोकि कृषि क्षेत्र में नवीनतम

तकनीक एवं उन्नत किस्म विकसित करने, बागवानी की पैदावार बढ़ाने, पशुपालन एवं मत्स्य पालन संबंधी उन्नत को लाभकारी बनाने, उत्पादन बढ़ाने, पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु तथा नवाचारों को बढ़ावा देना भी इन विश्वविद्यालयों की अहम जिम्मेवारी बन चुका है।

सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य कृषि शिक्षा को समयानुकूल, रोजगारपरक और तकनीक आधारित बनानाः प्रो. काम्बोज

हकृवि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका के रोडमैप पर सम्मेलन में चर्चा की गई। उन्होंने आई.ए.यू.ए. का धन्यवाद करते हुए कहा कि नवीनतम तकनीकों को एक दूसरे से सांझा करने एवं कृषि संबंधी चुनौतियों का समाधान निकालने में यह सम्मेलन एक सेतु का कार्य करता है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी विश्वविद्यालय आपस में एमओयू के माध्यम से शोध के क्षेत्र में एक दूसरे का सहयोग करें तो इसके और बेहतर परिणाम होंगे। इस सम्मेलन की सिफारिशें कृषि शिक्षा, शोध एवं विस्तार को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होंगी।

नई शिक्षा नीति के तहत कुछ टॉपिक शामिल कर सकते हैं कोर्सों में : डा. अजीत

कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी डॉ. अजीत सिंह यादव ने बताया कि नई शिक्षा नीति- अपनी आवश्यकता के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण टॉपिक शामिल कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों को स्थानीय कृषि समस्याओं का निदान करने की जानकारी मिलेगी। उन्होंने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के साथ मिलकर अपनी समस्याओं का निदान कर सकते हैं। सम्मेलन में आई.ए.यू.ए. के पूर्व अध्यक्ष डॉ. परविन्दर कौशल एवं सचिव डॉ. दिनेश कुमार सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर सम्मेलन में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी तथा वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान पर कुलपतियों ने रखे विचार

सम्मेलन में तीन तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में खेत से भविष्य तकः कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, दूसरे सत्र में विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा तीसरे सत्र में सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर विभिन्न कुलपतियों ने अपने विचार रखे।

प्रथम सत्र में डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला के कुलपति डॉ. शरद रामराव गडाख ने किसानों की आय दोगुनी करने का मॉडल प्रस्तुत किया। वसंतराव नाइक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ, परभणी के कुलपति प्रो. विचार रखे। सत्र में उत्पादन लागत को कम करने और उत्पादकता बढ़ाने के लिए छोटे किसानों के लिए खेत पर मशीनीकरण बढ़ाना, कृषि के मशीनीकरण में एक प्रभावी उपकरण के रूप में गांव स्तर पर कस्टम हायरिंग सेंटर स्थापित करना, ग्रामीण युवाओं और एग्रीकल्चर ग्रेजुएट्स को एग्री-एंटरप्रेन्योर के तौर पर खेती की ओर आकर्षित करना, प्रति यूनिट एरिया में सस्टेनेबिलिटी और प्रॉफिटेबिलिटी बढ़ाने के लिए दोहराए जा सकने वाले समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल का विकास, कम से कम इंसानी दखल के साथ खेती को सपोर्ट करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस/डिजिटल प्लेटफॉर्म, फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करना और प्रोसेसिंग का अनुपात बढ़ाने जैस बिंदुओं को अपनाने पर विशेष जोर दिया गया। आसाम कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं सत्र के को चेयरमैन डॉ. बिद्युत चंदन डेका ने भी अपने विचार रखे।

प्रो.काम्बोज ने कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार को मजबूत करने पर रखे विचार

दूसरे सत्र में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार को मजबूत करने पर अपने विचार रखे। प्रो. काम्बोज ने नई शिक्षा नीति-2020 को लचीली, बहु-विषयक, अनुसंधान-उन्मुख और समावेशी कृषि शिक्षा, किसान-केंद्रित, बाजार-लिंक्ड और डिजिटल रूप से सक्षम बताया। जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने वर्ष 2047 के लिए पशुओं में जीनोम एडिटिंग और क्लोनिंग विषय पर अपने विचार रखते हुए बताया कि ये टेक्नोलॉजी भविष्य की डेयरी मांग को पूरा करने में गेम चेंजर साबित होगी। एन.डी.आर.आई. करनाल के निदेशक एवं कुलपति डॉ. धीर सिंह ने पोषण सुरक्षा के बढ़ते महत्व पर जोर दिया। तीसरे सत्र में सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	6-1-26	2	1-4

दैनिक जागरण

तकनीक, शोध और युवा तय करेंगे कृषि का भविष्य

हिसार में 49वें कुलपति सम्मेलन में कुलपतियों के साथ मुख्य अतिथि डा. कृष्ण लाल मिढा।

जागरण संवाददाता • हिसार : कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को नवीनतम तकनीक, उन्नत किस्मों के बीज देने के अलावा कृषि क्षेत्र के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने तथा देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। यह बात हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण लाल मिढा ने कही। वे सोमवार को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के दो दिवसीय 49वें सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि पहुंचे थे। इस दौरान इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आइएयू) के अध्यक्ष एवं पंतनगर के जीबीपीयूएटी के कुलपति डा. मनमोहन सिंह बतौर विशिष्ट अतिथि पहुंचे। हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। मिढा ने सतत कृषि, नवीनतम तकनीकों के समावेश और युवाओं को कृषि क्षेत्र से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने तथा खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का एशिया महाद्वीप के कृषि विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान है।

हकृवि ने 305 से अधिक उन्नत किस्में विकसित की

हकृवि ने अपने गठन के बाद 305 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करके देश के खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने में विशेष योगदान किया है। गत पांच वर्षों के दौरान हकृवि ने 50 से अधिक किस्में विकसित एवं चिन्हित की हैं। जिनमें गेहूं, सरसों, मूंग, बाजरा व चारा फसलों की भी उन्नत किस्में शामिल हैं। डिप्टी स्पीकर ने धान की सीधी बिजाई, फसल अवशेष प्रबंधन, मत्स्य पालन सहित विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने सम्मेलन में भाग ले रहे कुलपतियों से आह्वान करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र को गति देने एवं भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की अह्म भूमिका रहेगी। उन्होंने सम्मेलन में स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलाग का विमोचन भी किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	7-1-26	2	6-8

कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने किया अग्रोहा शक्तिपीठ का भ्रमण

महाराजा अग्रसेन के जीवन दर्शन, मानवीय सिद्धांत से करवाया अवगत

भास्कर न्यूज | अग्रोहा

अग्र विभूति स्मारक शक्तिपीठ अग्रोहा विश्व भर में अपनी पहचान बना चुका है। देश के विभिन्न राज्यों से आए कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने ऐतिहासिक अग्रोहा शक्तिपीठ का भ्रमण किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल शरण गर्ग ने सभी कुलपतियों का स्वागत करते हुए उन्हें पूरे अग्र विभूति स्मारक का विस्तार से भ्रमण करवाया।

भ्रमण के दौरान गोपाल शरण गर्ग ने कुलपतियों को महाराजा अग्रसेन के जीवन दर्शन, उनके सामाजिक, आर्थिक और मानवीय सिद्धांतों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि महाराजा अग्रसेन के सिद्धांत समानता, सहयोग, अहिंसा, सामाजिक समरसता और जनकल्याण आज के समय में भी प्रासंगिक हैं और समाज को नई दिशा देने की क्षमता रखते हैं।

अग्रोहा शक्तिपीठ में भ्रमण के दौरान मौजूद विभिन्न राज्यों से आए कुलपति।

हरियाणा प्रदेश के महामंत्री एवं प्रवक्ता विपिन गोयल छानीवाला ने कहा कि अग्र विभूति स्मारक में संचालित विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एवं सेवा कार्यों को अवगत कराया और इसे भारतीय संस्कृति व मूल्यों का जीवंत केंद्र बताया। उन्होंने कहा कि अग्रोहा शक्तिपीठ और अग्र विभूति स्मारक न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देने का भी कार्य कर रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
वायरल सच न्यूज	06.01.2026	--	--

आईएयूए का उद्देश्य विश्वविद्यालयों के उत्कृष्ट कार्यों को सांझा करना एवं चुनौतियों का हल निकालना : डॉ मनमोहन सिंह

हिसार, वायरल सच (महेंद्र गोयल) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) द्वारा आयोजित किए गए दो दिवसीय सम्मेलन का समापन हुआ। सम्मेलन में देश के कृषि, बागवानी, पशुपालन तथा मत्स्य पालन विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भाग लिया। आईएयूए के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ मनमोहन सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि कुलपतियों का सम्मेलन केवल एक औपचारिक बैठक नहीं, बल्कि देश में कृषि शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को नई दिशा देने वाला मंच है। जो अंततः किसानों, विद्यार्थियों और देश की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाता है। उन्होंने कहा कि देश में 74 कृषि विश्वविद्यालय हैं जोकि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक एवं उन्नत किस्म विकसित करने, बागवानी की पैदावार बढ़ाने, पशुपालन एवं मत्स्य पालन संबंधी उन्नत पद्धतियां विकसित करने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कृषि को लाभकारी बनाने, उत्पादन बढ़ाने, पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु तथा नवाचारों को बढ़ावा देना भी इन विश्वविद्यालयों की अहम जिम्मेवारी बन चुका है। उन्होंने बताया कि आईएयूए का मुख्य उद्देश्य अलग-अलग विश्वविद्यालयों द्वारा किए उत्कृष्ट कार्यों को सांझा करना, कार्यों में आ रही चुनौतियों का हल निकालने के लिए सरकार के साथ तालमेल स्थापित करके समाधान सुनिश्चित करना है ताकि विश्वविद्यालय और अधिक बेहतर ढंग से अपना कार्य कर सकें।

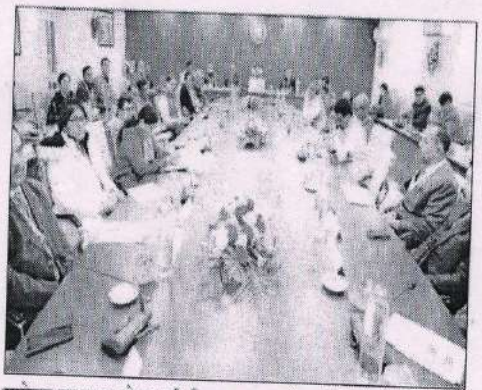

सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य कृषि शिक्षा को समयानुकुल, रोजगारपरक और तकनीक आधारित बनाना: प्रो. बी.आर. काम्बोज

हकृवि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका के रोडमैप पर सम्मेलन में चर्चा की गई। उन्होंने आईएयूए का धन्यवाद करते हुए कहा कि नवीनतम तकनीकों को एक दूसरे से सांझा करने एवं कृषि संबंधी चुनौतियों का समाधान निकालने में यह सम्मेलन एक सेतु का कार्य करता है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी विश्वविद्यालय आपस में एमओयू के माध्यम से शोध के क्षेत्र में एक दूसरे का सहयोग करें तो इसके और बेहतर परिणाम होंगे। इस सम्मेलन की सिफारिशें कृषि शिक्षा, शोध एवं विस्तार को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होंगी। भारत एक कृषि प्रधान देश है जहां करोड़ों लोगों की आजीविका कृषि पर निर्भर है। ऐसे में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका केवल कृषि शिक्षा देने तक सीमित नहीं, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने, संसाधनों के संरक्षण और सतत विकास को सुनिश्चित करना भी है। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य कृषि शिक्षा को समयानुकूल, रोजगारपरक और तकनीक आधारित बनाना है। कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी डॉ. अजीत सिंह यादव ने बताया कि नई शिक्षा नीति - 2020 के तहत कृषि विश्वविद्यालय स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में अपनी आवश्यकता के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण टॉपिक शामिल कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों को स्थानीय कृषि समस्याओं का निदान करने की जानकारी मिलेगी। उन्होंने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के साथ मिलकर अपनी समस्याओं का निदान कर सकते हैं।

सम्मेलन में आईएयूए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. परविन्दर कौशल एवं सचिव डॉ. दिनेश कुमार सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर सम्मेलन में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी तथा वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	06.01.2026	--	--

आईएयूए कुलपतियों के 49वें सम्मेलन का समापन, कृषि शिक्षा को नई दिशा पर मंथन

हिसार (सच कहूँ/मुकेश)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) द्वारा आयोजित कुलपतियों के 49वें दो दिवसीय सम्मेलन का समापन हो गया। सम्मेलन में देशभर के कृषि, बागवानी, पशुपालन एवं मत्स्य पालन विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भाग लिया। आईएयूए के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य विश्वविद्यालयों के उत्कृष्ट कार्यों को साझा करना और कृषि शिक्षा, अनुसंधान व नवाचार से जुड़ी चुनौतियों का समाधान निकालना है। उन्होंने बताया कि देश के 74 कृषि विश्वविद्यालय कृषि को लाभकारी बनाने और किसानों की आय बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। हकृवि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कृषि शिक्षा को समयानुकूल, रोजगारपरक और तकनीक आधारित बनाने पर सम्मेलन में विशेष चर्चा हुई। वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका महत्वपूर्ण है। आईसीएआर के एडीजी डॉ. अजीत सिंह यादव ने नई शिक्षा नीति-2020 के तहत पाठ्यक्रमों को स्थानीय जरूरतों के अनुरूप बनाने पर बल दिया।